जल संचय

नरेश कुमार
राष्ट्रीय जलविज्ञान संस्थान,
रुड़की

प्रभु ने जो उपहार दिए हैं,
इस धरती पर, आज मनुष्य को।
इन सबमें जल सर्वश्रेष्ठ है,
जीवन धन में यही ज्येष्ठ है।

है नहीं जड़–चेतन इस जग में,
बिन जल जो जीवन जी पाए।
जल से निर्जन में भी जीवन,
बिन जल जन, निर्जन हो जाए।

साठ फीसदी जल मानव तन में,
वृक्षों में चालीस रहे यह।
जगत वनस्पति जितनी महकी,
सबका कारण जल ही है यह।

जग में जितनी भी खुशहाली,
या वन–उपवन में हरियाली।
उन सब को जल ही है देता,
जीवन में प्राणों की लाली।

जब इस जग में था न कहीं कुछ में,
गैसों का गुब्बार महज था।
प्रचंड धमाका हुआ अचानक,
चूर सकल गुब्बार, सहज था।

कई करोड़ों वर्षों तक फिर,
गैस खंड ब्रह्मांड में फैले।
यह प्रक्रिया रूकी कि तब, जब,
तारक संग बनी नभगंगा।

इधर भूमि थी परत बनाती,
उधर पनपती ज्वालामुखियां।
जल ने ले अस्तित्व, जगत की,
इसी समय खोली थी अंखियां।

इस धरती पर जितना है जल,
कुछ हिम है, कुछ वाष्प और जल।
कुछ जल पेय, अपेय बहुत जल,
सर्वाधिक है सागर का जल।

जहां कहीं भी हरियाले वन,
वहीं सके हो जल भी संचय।
झड़ पत्तों से धरा सोखती,
करती भू–गत फिर, जल संचय।

किंतु जहां निर्जन है धरती,
बे–वन हो, बे–मन है धरती।
जल बहाव तो तीव्र वहां पर,
जिससे होता भू–जल का क्षय।

गंदा जल, जिसमें मल जल भी,
बह–बहकर सागर में मिलता।
सागर जल फिर दूषित होकर,
फैलाता बीमारी हर पल।

गंधक सोडियम, कैल्शियम, पोटेशियम,
क्लोरीन, मेग्नेशियम, कार्बन।
यह सब मिल हैं दूषित करते,
जल पीने वालों के तन–मन।

जल प्रदूषण, मूल दुखों का,
धरती पर है कहर बरसता।
कहीं बाढ़, बीमारी आती,
कहीं, बूंद हित जीव तरसता।

अगर बचाना है जीवन को,
या फिर करना जल का संचय।
तो फिर मानव कसो कमर अब,
रोको इसका, अतिशय अपव्यय।